سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ

सूरह माऊन मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ط ①

क्या तुमने (उसे) देखा? वह जो प्रतिफल (क़यामत/बदले के दिन) को झुठलाता (नकारता) है।

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ لا ②

यह वही है, जो अनाथ को धक्के देता (धुतकारता) है।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ط ③

और विपन्न (निर्धन) को भोजन कराने पर (को) प्रेरित नहीं करता।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ④ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ لا ⑤

तो उन नमाजियों की विपत्ति (बर्बादी/विनाश) है। जो अपने नमाज से असावधान (भटके हुए) हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ لا ⑥

वे जो दिखावा करते हैं।

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ع ⑦

और जो साधारण (मामूली) सी (वस्तु की) मदद भी रोकते हैं।